गुन धनी के गाते गाते, गई सारी आरबल।
अवगुन अपने भाखते, उमर खोई न सकी चल।। ९ ।।

धनी के मेहर के गुण गाते-गाते सारी आयु व्यतीत हो गई। अपने अवगुणों को बताते-बताते भी उम्र गंवा दी पर तन न छोड़ सकी।

अब हुकम होए धनी सो करूं, मेरा बल न चले कछू इत।
सुरखरु तुम करोगे, पुकार कहे महामत।। १० ।।

अब श्री महामतिजी कहते हैं धनी! आपका जो हुकम हो, वही अब मैं करूं? मेरा बल इस माया में चलता ही नहीं है। अब तुम ही सामने आने की शक्ति दोगे तब मैं आपके सामने आ सकूंगी। ऐसी मेरी बार-बार प्रार्थना है।

॥ प्रकरण ॥ १०० ॥ चौपाई ॥ १४९२ ॥

राग श्री

साथ जी सुनो सिरदारो, मुझ जैसी न कोई दुष्ट।
धाम छोड़ झूठी जिमी लगी, चोर चंडाल चरमिष्ट।। १ ।।

हे मेरे सिरदार सुन्दरसाथजी! सुनो, मेरे जैसा कोई दुष्ट नहीं है। मैं अखण्ड घर के सुखों को छोड़कर झूठी माया में लगी रही। मैंने चोर, चांडाल और ऊपरी मान-मर्यादा वालों जैसा काम किया।

प्रेम खोया मैं बानी कर कर, हो गया जीव कोई भिष्ट।
साथ के चरन धोए पीजिए, ताको दिए मैं कष्ट।। २ ।।

मैंने धनी की वाणी को बार-बार सुनाकर अपने जीव को भ्रष्ट कर दिया है। जिन सुन्दरसाथ के चरण को धोकर पीना चाहिए, उनको मैंने कष्ट दिया।

मुख बानी केहेलाई बड़ी कर, मांहें ब्रह्म सृष्ट।
पंथ पैंडे संसार के ज्यों, होए चलाया इष्ट।। ३ ।।

ब्रह्मसृष्टियों में मुझे बड़ा बनाकर मेरे मुख से वाणी कहलाई और संसार के पंथ-पैंड़ों की तरह ही एक धर्म का इष्ट बनकर नया धर्म चलाया।

ले पंडिताई पड़ी प्रवाह में, कर कर ग्यान गोष्ट।
न्यारा हुआ न नेहेकाम होए के, मैं लिया न निरगुन पुष्ट।। ४ ।।

मैंने पण्डितों की तरह ज्ञान गोष्ठी (शास्त्रार्थ) की। माया की चाहना छोड़कर मैं अलग नहीं हो सकी और दृढ़ता के साथ पारब्रह्म को नहीं लिया।

अनेक अवगुन किए मैं साथसों, सो ए प्रकासूं सब।
छोड़ अहंकार रहूं चरनों तले, तोबा खैंचत हों अब।। ५ ।।

मैंने सुन्दरसाथ से बहुत अवगुण किए हैं। उनका मैं बखान करती हूं। अपने अहंकार को छोड़कर सुन्दरसाथ के चरणों में ही रहूंगी। इस तरह से मैं अपनी भूल मानती हूं।

एते दिन धनी धाम छोड़ के, दई साथ को सिखापन।
अब साथें मोको समझाई, तिन थें हुई चेतन।। ६ ।।

इतने दिन तक मैं धाम-धनी को छोड़कर सुन्दरसाथ को समझाती रही। अब सुन्दरसाथ ने मुझे समझाया, तब मुझे होश आया।

Nijanand App

कृपा करी साथ सिरदारों, मुझ पर हुए मेहेरबान।
निरगुन होए न्यारी रहूं, छोड़ बड़ाई गुमान।।७।।

मेरे सिरदार सुन्दरसाथ ने मेहरबान होकर मुझ पर कृपा की जो मुझे समझाया। अब अपने गुमान और अहंकार छोड़कर निर्गुण होकर न्यारी रहूं, यही अच्छा लगा।

दिन कयामत के आए पोहोंचे, अब कैसी ठकुराई।
धिक धिक पड़ो तिन बुध को, जो अब चाहे बड़ाई।।८।।

अब ब्रह्माण्ड को अखण्ड करने का समय आ गया है। अब सुन्दरसाथ में क्या सिरदारी करना? ऐसी बुद्धि को धिक्कार है जो अब भी मान चाहती है।

अब हुकम चढ़ाऊं सिर साथ को, बकसो मेरी भूल।
भी दीजो सिखापन मुझको ज्यों होऊं सनकूल।।९।।

अब सुन्दरसाथ का जो हुकम होगा, मैं वही करूंगी। हे साथजी' मेरी भूल को माफ करो। मुझे समझाओ कि किस तरह से मैं धनी के सामने खड़ी हो सकूं।

इन जिमी में साथ में, जिनों करी सिरदारी।
पुकार पुकार पछताए चले, जीत के बाजी हारी।।१०।।

हे सुन्दरसाथजी! इस माया में जिन्होंने भी सुन्दरसाथ पर नेतागिरी की, वह अन्त समय पुकार-पुकार के कहेंगे कि हमने जीती बाजी नेता बन के हारी है।

सो देख के ना हुई चेतन, मूढ़मती अभागी।
अब लई सिखापन साथ की, महामत कहे पांउं लागी।।११।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं ऐसी मूर्ख और अभागिनी हो गई कि सुन्दरसाथ की हकीकत देखकर भी सावचेत नहीं हुई। अब सुन्दरसाथ के सिखापन (शिक्षा) को मैंने उनके चरण पकड़कर ग्रहण कर लिया।

।। प्रकरण ।। १०१ ।। चौपाई ।। १५०३ ।।

राग श्री

बुजरकी मारे रे साथ जी, बुजरकी मारे।
जिन बुजरकी लई दिल पर, तिनको कोई ना उबारे।।१।।

हे सुन्दरसाथजी! मान, बड़ाई ही सर्वनाश करती है। जो मान चाहते हैं उनका उद्धार कोई नहीं कर सकेगा?

आगूं कई मारे बुजरकिएं, जिन दृढ़ कर लई विश्वास।
सो देखे मैं अपनी नजरों, निकस चले निरास।।२।।

जिन्होंने दृढ़ता के साथ मान बड़ाई ली उनके जीवन को इसी मान बड़ाई ने नष्ट कर दिया। उनको निराश होकर जाते हुए मैंने अपनी आंखों से देखा है।

कई मारे कई मारत है, ऐसी बुजरकी एह।
न देत देखाई इन माया में, बिना बुजरकी जेह।।३।।

यह मान-बड़ाई ऐसी कमबख्त है कि इसने कईयों के जीवन नष्ट कर दिए और कईयों के कर रही है' इस माया के संसार में कोई ऐसा नहीं दिखता जो मान-सम्मान न चाहता हो।

Nijanand App